रविवार, दिनाँक 10-09-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी,

तारो ते पार उतारो महाबीर जी।

काम क्रोध हैं दुश्मन भारी, इनको मार मुकाओ महाबीर जी।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, नारद जी वी बीन बजावे महाबीर जी।

शेष गणेश तुहाडा हर जस गावे, इन्द्र वी दिल विच हर्षावे महाबीर जी।

तुलसी दास तुहाडा ध्यान लगावे, विभीषण नूं अमर बनाया महाबीर जी।

लंका जीत अयोध्या नूं आवन, भरत नूं राम मिलाया महाबीर जी।

दिन रात भैणों तुसीं नाम ध्यावो, गदा महाबीर जी दा हृदय विच वसाओ।

दुष्टां नूं मार मुकाया महाबीर जी, सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी।

मैं दासी नूं समदृष्टि कर देओ, भवसागर से पार उतारो महाबीर जी।

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी।

सजनों इस भजन में बहुत सुन्दर और स्पष्ट बात कही गई है। मानो आत्मोद्धार हेतु मिला यह मानव चोला चौरासी लाख योनियों के पश्चात बड़ी ही मुश्किल से मिलता है ताकि हम इस चोले का लाभ उठाकर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा सकें। ऐसा ही हो उसके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे बेनती करते हुए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जो भी विकार मेरे अन्तर्मन में अब तक घर कर चुके हैं, उनको अब समेट दो ताकि मैं आत्मिक दर्शन कर धर्म अनुकूल सत्य निष्ठा से जीवन जीने के काबिल बन जाऊँ। सजनों यह सबसे उत्तम इच्छा

है। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति व विचार अपनाये बगैर इस सर्वोच्च इच्छा की पूर्ति कदाचित नहीं हो सकती। इस बात को समझते हुए हमारे लिए बनता है कि हम भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के हर विदित विचार को पहले तो इज़्ज़त यानि सम्मान देवें और फिर उसे व्यावहारिक रूप प्रदान कर निष्कामता से जीवन जीने के काबिल बन जाएँ ताकि हमें पुनः अनेक योनियों में न भटकना पड़े। इस भजन के अन्त में सच्चेपातशाह जी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से समदृष्टि होने की युक्ति बख़्शने की प्रार्थना करते हैं। यहाँ जानो कि समदृष्टि वही हो सकता है जिसका नज़रिया समभाव अनुरूप हो जाता है। अतः अपने नज़रिये को समभाव अनुरूप साधने हेतु हमें खुद पर यह नियन्त्रण/निगरानी रखनी है कि किसी विध् भी हम समभाव-समदृष्टि के असूल के विरुद्ध कुछ न कर बैठें यानि समभाव-समदृष्टि के नियमों की उल्लंघना करने की भूल न कर बैठें अन्यथा यह भूल बहुत महँगी पड़ेगी और जीवन का सुख-चैन सब खत्म हो जाएगा। ऐसा होने पर आत्म-विस्मृति में चले जाओगे और विक्षिप्त हो जाओगे और अपना व जगत का यथार्थ समझ नहीं आएगा यानि विवेकहीन हो जाओगे। ऐसे में सत्य की परख कैसे कर पाओगे? सत्य/झूठ की पहचान नहीं कर पाओगे तो बुद्धिहीन हो जाओगे और अन्यों को जो भी करता हुआ देखोगे वैसी ही नकल कर तद्नुरूप ढलते जाओगे। इस तरह अक्ल पर ताला लग जाएगा और आप बौद्धिक तौर पर कमज़ोर हो पूरी तरह से अपने यथार्थ स्वरूप को भूल जाओगे। सजनों ऐसे मानव ही इस संसार में शक्ति विहीन होकर विचरते हैं। ऐसा होने पर 'काम' मन में सुप्त अवस्था से जाग्रत हो जाता है। काम के जाग्रत होने पर क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकार हमारी अन्दरुनी व बैहरुनी दोनों वृत्तियों की निर्मलता भंग कर देते हैं। इससे बहुत बड़ा नुक्सान हो जाता है।

ऐसा न हो इस हेतु सजनों हमें सम्भलकर और समझकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर, प्रयोग में लाने का पुरुषार्थ दिखाना है। कहने का आशय यह है कि खुद पर थोड़ा सा नियन्त्रण रखते हुए,

समभाव-समदृष्टि का जो कायदा है - जिव्हा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ, दृष्टि कंचन, उसे पूरी तरह वर्ताव में लाना है ताकि हृदय पुनः प्रकाशित हो जाए और समभाव नज़रों में हो जाए। इस समभाव समदृष्टि के कायदे को वर्ताव में लाने का आवाहन आप सबको तभी से बार-बार दिया जा रहा है जब से आप इस द्वारे से जुड़े हो। कम से कम आप इतना तो यादगीरी में रखकर वर्ताव में ला सकते हो और अपने-अपने परिवार के आदर्श बन सकते हो ताकि आपके साथ-साथ आपके परिवारजन भी आत्मोद्धार करने में समर्थ हो जाएँ। यहाँ याद रखो कि जो इन्सान समदृष्टि हो जाता है वह धर्मानुकूल जीवन जीता है यानि वह हर हाल में सत्यनिष्ठा से जीवन जीता है और कदाचित धर्म नहीं हारता क्योंकि उसे निज-धर्म की पहचान हो जाती है। इसी कारण वह निर्विकारिता अनुरूप अपने स्वभाव को ढालता है। इसके विपरीत जहाँ विकार होते हैं वहाँ गन्दगी तो फैलती ही है। गन्दगी फैलती है तो शारीरिक व मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। ऐसा होने पर यानि आधि-व्याधि से ग्रसित होने पर, जिस शुभ कार्य की सिद्धि हेतु हमें यह मानव जीवन मिलता है, हम उसको वृथा गँवा बैठते हैं। अब आप ही बताओ कि यह अपना सजन बनने की बात है या वैरी बनने की?

'यह तो अपना वैरी बनने की बात है'।

ऐसे में आप ही बताओ कि अगर इन्सान अपने साथ ही वैर कमाने की मूर्खता करे और उसके बावज़ूद भी अकड़कर चले तो क्या यह उसे शोभा देता है?

'नहीं जी'।

तो फिर शास्त्र-विहित जो मानव का धर्म है उस धर्मानुकूल व्यवहार को अपनाओ। फिर किसी से कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस तरह अपने साथ-साथ अपने माता-पिता के भी सजन बनो और उनको भी धर्मानुकूल ढलने के लिए प्रेरित कर समाज के सजन बन जाओ। जानो इसके लिए और कुछ नहीं केवल सबके सामने धर्मानुसार जीवन यापन करने का आदर्श स्थापित करना होगा। कहने का आशय यह है कि परमात्मा ने जो जीवन आदर्श एक मानव के लिए

बनाए हैं और कुदरती वेद-शस्त्रों द्वारा आप तक पहुँच रहे हैं, उन आदर्शों को सत्यता से अपनाना होगा और उन पर स्थिरता से बने रहना होगा। ऐसा करने से आपका मन स्वतः ही निर्विकारी बन जाएगा और आप जगत से आज़ाद होकर स्वतन्त्र मानसिकता वाले इन्सान बन जाओगे। इस सन्दर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी धर्म की महत्ता बताते हुए कह रहा हैः-

धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर, सजनों तन मन धन सब वारना रे

अर्थात धर्म के रास्ते पर चलते हुए उस पर अपना तन-मन-धन वारने से भी न सकुचाओ। जानो यह धर्मधारी बनने की बात है। धर्मधारी ही समदृष्टि हो सकता है क्योंकि वह किसी भी संगी-साथी या प्राणी की हानि की बात न तो सोच सकता है, न बोल सकता है और न ही कर सकता है यानि उसका मन-वचन-कर्म धर्मानुकूल ढल जाता है और उसके हृदय में सुकर्मों का राज स्थापित हो जाता है। इस तरह उसका हृदय असीम शान्ति को प्राप्त हो जाता है। अब जहाँ शान्ति होती है वहाँ शक्ति तो होती ही होती है। इस तरह इन्सान शान्ति-शक्ति को धारणकर सबसे बलवान हो जाता है और निर्भयता से आत्म-विश्वास के साथ धर्म पथ पर निषंग आगे बढ़ते हुए परोपकार कमाता है। यहाँ जानो सजनों कि परोपकार वृत्ति में ढलना परमात्म स्वरूप यानि एक हो जाने की बात होती है। अतः जीवन की अनमोलता को समझो ताकि कहीं यह वृथा न चला जाए। इस हेतु खुद पर आत्म-नियन्त्रण रखने वाले इन्द्रिय-निग्रही इन्सान बनो ताकि माया के कामरूपी भ्रमजाल से सुरत आज़ाद हो जाए। जानो ऐसा होने पर ही मन में कामुक भाव जाग्रत नहीं होंगे और वैर-विरोध, तेरी-मेरी का भाव नहीं उपजेगा। तभी हम सार्थक वाणी बोलने में समर्थ हो पाएँगे और सबको प्रिय लगेंगे। यहाँ जानो कि सार्थक वाणी/ध्वनि शब्द गुरु ओ३म् अमर आत्मा के साथ ख़्याल का नाता ध्यानपूर्वक जोड़ने पर हृदय में उतरती है। ऐसा होते ही मन निश्चल हो जाता है और किसी कारण भी जगत व इसके पदार्थों को देखकर चलायमान नहीं होता। इस तरह हमारा ख़्याल हमेशा अपने सच्चे घर में ठहरा रहता है। यह है सजनों जीवन विजयी होने का मन्त्र। आप भी जीवन विजयी होने हेतु समदृष्टि

होने का प्रयास करो। जानो ऐसा सिद्ध करने के लिए आपके पास सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को जीवन व्यवहार में लाओ और बुद्धिमानों की भान्ति जगत से निर्लिप्त रह यानि अपनी यथार्थ अवस्था में बने रह विश्राम को पा लो। जानो आज के समय में ऐसा करना अति आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में अब आगे ध्यान से सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

उठो हनुमान जी तेज अपना दिखा लौ, अपना दिखा लौ।

भारत माता पई ए रोंदी उसनू हर्षा लौ, उसनू हर्षा लौ।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

प्रीति हनुमान जी नाल कोई विरला पिया लांवदा ओ विरला पिया लांवदा।

ओदी रमज़ कोई विरला पिया पछानदा, कोई विरला पिया पछानदा।।

ओहदे नाल तुआडा है बचा कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

वक्त है अखीरी छडो कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ, कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ।

मनुं हटा दियो कलुकाल दीयाँ यादगीरियां, कलुकाल दीयाँ यादगीरियां।।

घड़ा तुआडा ए होना है ठा, कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

भारत माता देखो कैसे संकट विच आई है संकट विच आई है।

कुकर्मां ते अधर्मां ओहदी होश भुलाई है, होश भुलाई है।।

उठो महाबीर संकट माता दे दियो मिटा, कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

ओ इन्सानों कलुकाल ने खून पीता है बहुतेरा जी, ओ पीता है बहुतेरा जी।

अपनी इन्सान बाज़ी जितने दा वेला जी, ओ जितने दा वेला जी।।

हनुमाज जी दे वचनां ते जा, नहीं ते फेर पछताऊगा, फेर पछताऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

आत्म पद् दियां तारियां कोई विरला पिया लांवदा, कोई विरला पिया लांवदा।

जन्म ते मरण कोई विरला पिया मिटांवदा, कोई विरला पिया मिटांवदा।।

परम् पद दी होई ए जिन्हुं चाह, जग प्रकाश हो जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

दोहाः- दरबार दे अन्दर हो रिहा कलुकाल दा प्रचार।

बालक गोदी विच पायके श्री राम जी कर रहे प्यार।।

सियापति रामचन्द्र जी की जय पवनसुत हनुमान जी की जय।

उमापति महादेव जी की जय।।

सजनों आज के कलुषित वातावरण के दृष्टिगत जगत में जो आपदा आने वाली है और जीवों की जो हालत होने वाली है, उसके सन्दर्भ में अभी आप सबने कुदरत का ऐलान सुना। अब अक्लमन्द तो वही होता है जो चेतावनी को समय पर समझकर अपने बचाव का प्रबन्ध कर लेता है। इस सन्दर्भ में अगर आप जन्म-मरण से छुटकारा पाकर दग्ध-भस्म की त्रास भुगतने से बचना चाहते हो और अपने आत्म-स्वरूप में यथा अटलता से बने रहते हुए अमर पद प्राप्त करना चाहते हो तो इस ऐलान को अनसुना मत करो। आशय यह है कि जो भी अपना बचाव चाहता है, वह सजन श्री शहनशाह हनुमान की के वचनों पर स्थिरता से बने रहना आरम्भ कर दे। जानो जैसा महाबीर जी चाहते हैं, जीवन में वैसा करना ही हितकर है। यह अपने आप में युग परिवर्तन के खेल के तहत् स्वाभाविक परिवर्तन लाने की बात है। अतः अगर चाहते हो कि आपका घर सतयुग बन जाए तो उसके लिए अपने मन से कलुकाल के वातावरण को साफ करने का दृढ़-निश्चय लो। ऐसा सिद्ध करने हेतु आपके पास नाम-अक्षर तो है ही। आप युक्तिसंगत इस क्रिया द्वारा अपने ख़्याल का नाता प्रभु संग जोड़ लो। यकीन मानो यदि आप ऐसा करने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाते हो तो जो जगत में उत्पात होने वाला है, आप उस परिस्थिति से बचे रहकर निर्विकारी अवस्था में सधे रह सकते हो। अतः यह सदा याद रखना कि अपनी सोच, बोल व कर्म में इस सकारात्मक परिवर्तन को लाने में किंचित मात्र भी विलम्ब करना अपने आप को खुद संकट में डालने की बात है क्योंकि तब फिर बचाव नहीं हो सकेगा और आप भवसागर में गोते खाते हुए दुर्दशा को प्राप्त होंगे। अपना सुख खरीदने के लिए एकान्त में बैठकर खुद को गहराई से समझाओ और अपने आप से कहो कि हे हठी इन्सान ! सजन श्री

शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करके अपने जीवन को पहचान ले और जागृति में आ जा। जागृति में आने का मतलब है आत्म-स्मृति में आ जाना और आत्मभाव अपनाकर सजनता का प्रतीक बन जाना। अतः आत्मा में शोभित परमात्मा से अपनी मित्रता मज़बूत कर मित्रवत् भाव में आ जा और इस तरह उस ईश्वर की सर्व-व्यापकता का बोध कर ले। जान कि यह एकभाव होने की बात है। जैसा कि कहा भी गया हैः-

एक ही मैं हो चुका दूसरा नहीं कोय।

दूसरा कोई किस तरह कहे जब एक एक ही होय।।

कौन करे मेरी मानता, कौन करे मेरी पूजा।

एक हूं सारे भूमण्डल, है नहीं कोई दूजा।।

सजनों उपरोक्त भावानुसार खुद को ढालना खुद सम्भलने व समाज को सम्भालने की बात है। अतः तद्नुकूल खुद को ढालना आरम्भ कर दो। फिर कह रहे हैं कि केवल सोचते ही मत रहो अपितु सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर आगे कदम बढ़ाना शुरु कर दो। हो सकता है कि इस विषय में पहले थोड़ी कठिनाई आए क्योंकि कलुषित स्वभाव पक्के हो चुके हैं पर आप घबराना नहीं अपितु उन पक्के स्वभावों पर जीत पाकर यथार्थता अनुरूप अपना नव-निर्माण कर लेना। यही समझदारी की बात है। अन्यथा तो जैसा सुना है 'घड़ा तुहाडा होणा है ठाह'। इस कथन अनुसार मृत्यु के आगोश में समा जाओगे। फिर कह रहे हैं कि अपने सजन बनो और आत्मा में शोभित परमात्मा, जो सब सुरतों के साजन हैं, उनके संग हो अपने आप को शोभायुक्त कर लो। याद रखो शोभायुक्त हुए तो आपकी प्रशंसा होगी और आप सबको अच्छे लगने लगोगे। अब ऐसा ही करने में समर्थ बनने हेतु अपने अन्दर उत्साह पैदा करना और मिलकर बोलनाः-

तूं वी मेरे साजन नाल प्यार करके देख लै ।

प्यार करके देख लै, दीदार करके देख लै ।

तूं वी मेरे साजन नाल..............।।

साजन मेरा बड़ा दयालु, हर पल दया दिखावे।

भक्ति ओहदी सब कोई करदा, पर अंत कोई विरला पाए ।

पर अंत कोई विरला पाए ।

तूं वी मेरे.............................।।

साजन मेरे दी सूरत इलाही, ए तां सब कोई जाने।

चमक- दमक लिश्कार नूँ देखे, पर कोई विरला ही पहचाने।।

पर कोई विरला ही पहचाने।

तूं वी मेरे.............................।।

सर्गुण वस्से निर्गुण वस्से, निर्वाण जोत ओहदी व्यापे।

परमधाम है आद्- शब्द, जित्थे सूरत- शब्द दा मिलापे।।

जित्थे सूरत- शब्द दा मिलापे।

तूं वी ऐसे साजन

नाल.................।।

सजनों अगर यह सुनकर परमात्मा के प्रति प्रेम जाग्रत हुआ है तो फिर उस प्रेम पर कुछ भी न्यौछावर करने से सकुचाना नहीं, घबराना नहीं। जानो तभी प्रियतम को पाकर एकरूप हो पाओगे। इस उत्तम उपलब्धि के तहत् शारीरिक स्वभावों का त्यागकर परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से बने रहना और इस तरह आत्मा में जो परमात्मा शोभित है, वैसा ही उत्तम आचरण अपनाकर अपने स्वरूप को पा जाना। जानो ऐसा करने पर ही परमात्म नाम कहा पाओवे। अब इतना सुनने के पश्चात अपनी किस्मत बनाना या बिगाड़ना आपके अपने हाथ में है। यदि किस्मत बनाते हो तो आपकी यश-कीर्ति युगों-युगों तक बनी रहेगी। इसके विपरीत किस्मत बिगाड़ने की स्थिति में निन्दा-उस्तत के पात्र बनोगे। सो अब अपने हित-अहित को पहचानकर समझदारी से निर्णय लेना ताकि यह मानव जीवन सकार्थ हो जाए। अब सब हिम्मत दिखाना, हिम्मत दिखाना और हिम्मत दिखाकर जन्म की बाज़ी जीत जाना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित, जय सीताराम जी।